प्रार्थना तथा पद

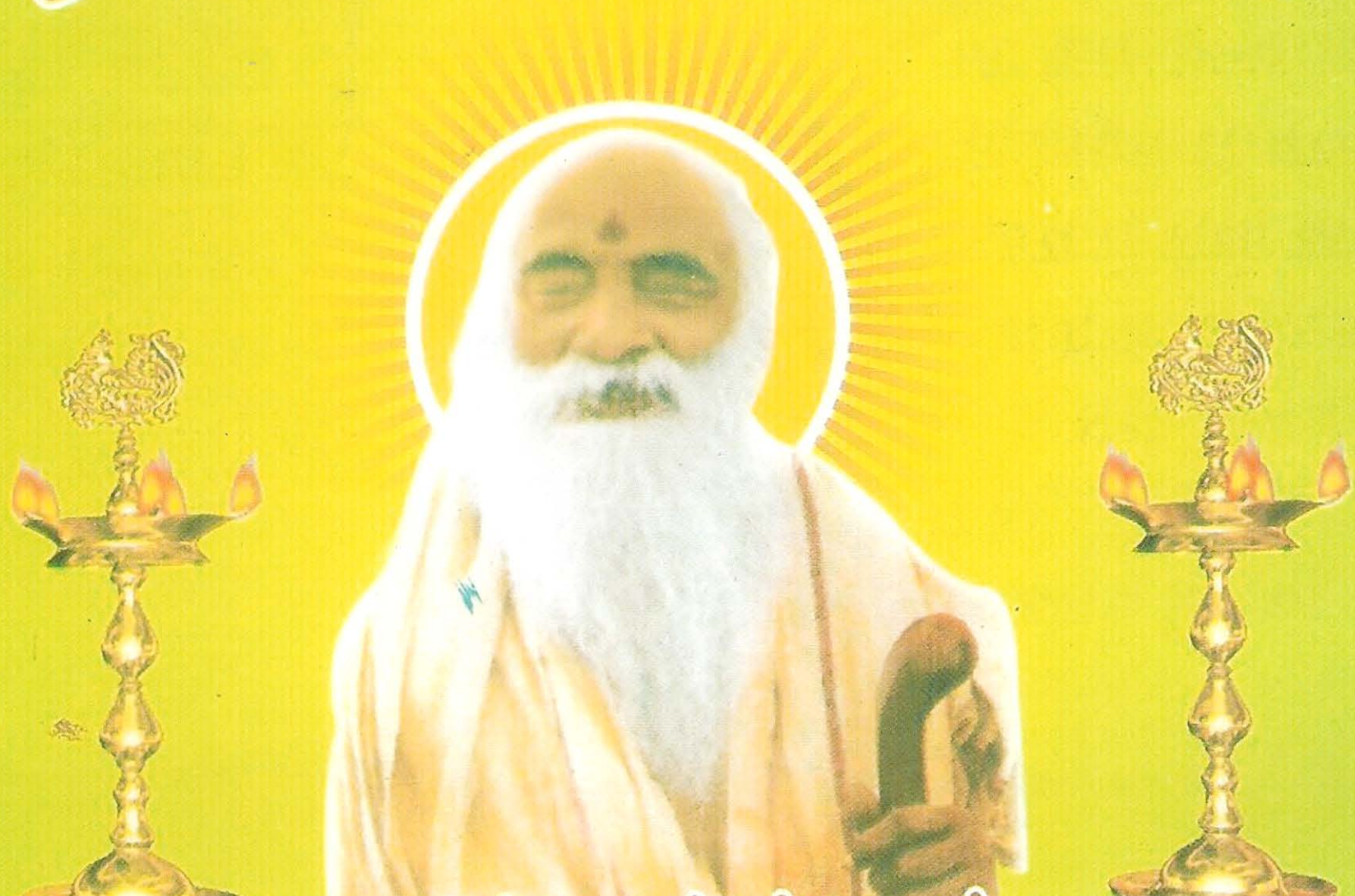

संस्थापक : ब्रह्मलीन पूज्यपाद श्री स्वामी शरणानन्द जी महाराज

* प्रार्थना *

(प्रार्थना साधक के विकास का अचूक उपाय है तथा
आस्तिक प्राणी का जीवन है)

मेरे नाथ! आप अपनी सुधामयी, सर्व-समर्थ, पतित-पावनी, अहैतुकी कृपा से, दुःखी प्राणियों के हृदय में त्याग का बल एवं सुखी प्राणियों के हृदय में सेवा का बल प्रदान करें, जिससे वे सुख-दुःख के बन्धन से मुक्त हो, आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन कर कृत-कृत्य हो जायें।

ॐ आनन्द! ॐ आनन्द!! ॐ आनन्द!!!

* हरिः शरणम् *

हरिः शरणम्, हरिः शरणम्,
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्,
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्,
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्,
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्,
हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।

* शरणागति-पुकार *

शिव शिव शंकर मन्मथहारी,
सदा रहें हम शरण तिहारी।
श्रीराम राघव अवध बिहारी,
सदा रहें हम शरण तिहारी।
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,
सदा रहें हम शरण तिहारी।
श्रीजिन बुद्ध त्याग व्रतधारी,
सदा रहें हम शरण तिहारी।
ज्ञान गुरुं मम हृदय विहारी,
सदा रहें हम शरण तिहारी।

* मैं नहीं, मेरा नहीं *

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।1।।
देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
"मेरा है" यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।।2।।
"मैं", 'मेरा' यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।
मैं नहीं.....।।3।।
जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं।।4।।
जिन्दगानी का खिला, मधुवन किसी का है दिया।
मैं नहीं.....।।5।।

जग की सेवा खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिये।
जिन्दगी का राज है, यह जानकर जी लीजिये।।6।।
साधना की राह पर, यह साधन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह सब किसी का है दिया।
मैं नहीं.....।।7।।

जीवन को सभी के लिए उपयोगी बनाने के उपाय

1. किसी को बुरा न समझना, किसी का बुरा न चाहना और किसी के साथ बुराई न करना-जगत् के लिए।
2. अकिंचन, अचाह और अप्रयत्न होना-अपने लिए।
3. मैं प्रभु का हूँ और प्रभु मेरे हैं-इस महामन्त्र को अपनाने से प्रभु के लिए जीवन उपयोगी हो जाता है।

※ मानव सेवा संघ के ग्यारह नियम ※

मानव किसी आकृति विशेष का नाम नहीं है। जो प्राणी अपनी निर्बलता एवं दोषों को देखने और उन्हें निवृत्त करने में समर्थ है, वही वास्तव में 'मानव' कहा जा सकता है।

1. आत्मनिरीक्षण, अर्थात् प्राप्त विवेक के प्रकाश में, अपने दोषों को देखना।
2. की हुई भूल को, पुनः न दोहराने का व्रत लेकर, सरल विश्वासपूर्वक, प्रार्थना करना।
3. विचार का प्रयोग अपने पर, और विश्वास का दूसरों पर, अर्थात् न्याय अपने पर, और प्रेम तथा क्षमा अन्य पर।

4. जितेन्द्रियता, सेवा, भगवत्-चिन्तन और सत्य की खोज द्वारा, अपना निर्माण।

5. दूसरों के कर्त्तव्य को अपना अधिकार, दूसरों की उदारता को अपना गुण और दूसरों की निर्बलता को अपना बल, न मानना।

6. पारिवारिक तथा जातीय सम्बन्ध न होते हुए भी, पारिवारिक भावना के अनुरूप ही, पारस्परिक सम्बोधन तथा सद्भाव, अर्थात् कर्म की भिन्नता होने पर भी, स्नेह की एकता।

7. निकटवर्ती जन-समाज की, यथाशक्ति, क्रियात्मक रूप से, सेवा करना।

8. शारीरिक हित की दृष्टि से, आहार-विहार में संयम तथा दैनिक कार्यों में स्वावलम्बन।

9. शरीर-श्रमी, मन-संयमी, बुद्धि-विवेकवती, हृदय-अनुरागी तथा अहं को अभिमान-शून्य करके, अपने को सुन्दर बनाना।

10. सिक्के से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से विवेक, तथा विवेक से सत्य को, अधिक महत्त्व देना।

11. व्यर्थ-चिन्तन त्याग, तथा वर्तमान के सदुपयोग द्वारा, भविष्य को उज्ज्वल बनाना।

* सर्वहितकारी कीर्तन *

हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे समर्थ, हे करुणा सागर, विनती यह स्वीकार करो।
हे समर्थ, हे करुणा सागर, विनती यह स्वीकार करो।
भूल दिखाकर उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।
भूल दिखाकर उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।
पीर हरो हरि, पीर हरो हरि, पीर हरो, प्रभु पीर हरो।
पीर हरो हरि, पीर हरो हरि, पीर हरो, प्रभु पीर हरो।।

* संकटहारी प्रार्थना *

हे भयहारी, गर्वप्रहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
शरण शरण, प्रभु शरण तिहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
हे दुःखहारी, गर्वप्रहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
शरण शरण, प्रभु शरण तिहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
जनहितकारी, गर्वप्रहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
शरण शरण, प्रभु शरण तिहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
मन्मथहारी, गर्वप्रहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
शरण शरण, प्रभु शरण तिहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
भवभयहारी, गर्वप्रहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।
शरण शरण, प्रभु शरण तिहारी। शरण तिहारी, शरण तिहारी।

* चौपाइयाँ *

श्रीराम जय राम जय जय राम
श्रीराम जय राम जय जय राम

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।1।।
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा।
तब रघुनाथ चरन अनुरागा।।2।।
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।
बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी।।3।।

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजनु जगत सब सपना।।4।।
हरि ब्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना।।5।।
देह धरे कर यह फलु भाई।
भजिअ राम सब काम बिहाई।।6।।
मनक्रम बचन छाँड़ि चतुराई।
भजत कृपा करिहहिं रघुराई।।7।।

श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम।

* जय हो ऋषिवर! जय हो। *

मानव सेवा संघ प्रवर्तक!
जय हो ऋषिवर! जय हो।
जय हो ऋषिवर! जय हो।
जय हो ऋषिवर! जय हो।।

अपने जाने असत् त्याग के,
महामंत्र अपनाने का।
सीधा मार्ग बताया जग को,
जीवन सफल बनाने का।।

बल, विद्या, सामर्थ्य आदि का।
जिसमें कुछ भी भेद नहीं

ऊँच नीच, औ सबल-निबल का,
जिसमें किंचित खेद नहीं।।

ऐसे सरल पूर्ण साधन का
ऋषिवर तुमने ज्ञान दिया
धर्मग्रन्थ सागर को मथकर
सुधा-सार का दान किया।।

मानव सेवा संघ प्रवर्तक!
जय हो ऋषिवर! जय हो।
जय हो ऋषिवर! जय हो।
जय हो ऋषिवर! जय हो।।

जय हो, जय हो, जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो।।

※ ऋषिवर! जग का कोटि नमन्!! ※

'सेवा' 'त्याग' 'प्रेम' है जीवन,
जिसका यही तराना है।
'आत्म-निरीक्षण', जीवन-सम्बल,
जिसका सुन्दर बाना है।।1।।

'मानवता' के पूज्य-पुजारी,
का सुन्दर सन्देश सुनो।
प्रेम सहित सबको अपना कर,
साधक! साधन-निष्ठ बनो।।2।।

चलते, फिरते, जगते, सोते,
सभी समय यह ज्ञान रहे।

"कोई और नहीं", "कोई गैर नहीं"
इस महावाक्य पर ध्यान रहे।।3।।
महाप्रयाण की घड़ियों में भी,
जीवन-कड़ियों को सुलझाया।
महामनीषी, महामहिम ने,
सबको मानवता सिखलाया।।4।।
सतत सजगता के प्रहरी तुम,
साधक-कुल के दिव्य रतन।
मानव सेवा संघ प्रवर्तक!
ऋषिवर! जग का कोटि नमन्।।5।।

* ऋषिवर! जग का कोटि प्रणाम्!! *

जीवन के इस तुमुल नाद में,
मधुर कण्ठ का राग सुनो।
मानव! तुमको 'मानव' बनना,
मानवता का पाठ सुनो।।1।।

बन 'अचाह', तुम बनो 'अकिंचन'
रंचक मन में डरो नहीं।
'अप्रयत्न' में सभी सफलता,
हटो नहीं, तुम डटो वहीं।।2।।

निज-विवेक का आदर करके,
बल का सद्-उपयोग करो।

'आत्म-निरीक्षण' महामन्त्र को,
जीवन में भरपूर भरो।।3।।
'लोभ','मोह','आसक्ति'छोड़कर,
'योग' 'बोध' का वरण करो।
राग-द्वेष को दूर भगाकर
चित्त-शुद्धि का पात्र भरो।।4।।
उठो-उठो, क्यों पड़े नींद में,
अंग-अंग में तेज भरो।
जन-जन में मानवता लाकर,
सारे जग को मुक्त करो।।5।।
यही धर्म है, यही कर्म है,
यही मर्म है जीवन का।

सोया मानव जागृत होवे,
यही लक्ष्य है जीवन का।।6।।
पुण्य-स्मृति की शुभ बेला में,
आज महाव्रत लेना है।
पुनः भूल ना दोहराने का,
निश्चय दृढ़ कर लेना है।।7।।
इसी में सच्ची गुरूभक्ति है,
सुप्त मनुजता जग जाए।
बचा हुआ है काम जरूरी,
इसको पूरा करना है।।8।।
सब कुछ तो श्रीहरि का ही है,
मेरा कुछ भी है नहीं।

प्यारे प्रभु मेरे अपने हैं,
मुझे चाहिए कुछ नहीं।।9।।
महासमाधि के दिन भी ऋषिवर,
मानवता का पाठ दिया।
जग कैसे आनन्दित होवे,
सबको यह उपदेश दिया।।10।।
मानवता के पूज्य मसीहा,
ऋषिकुल के मूर्धन्य महान्।
मानव सेवा संघ प्रवर्तक!
ऋषिवर! जग का कोटि प्रणाम्।।11।।

करुणा के अवतार!

जब जब, जब है जगत् भटकता, तब तब तुम आते हो।
अन्धकार को दूर भगाकर, नई ज्योति दरसाते हो।।1।।
जग की तपन बुझाने को प्रभु! निज करुणा बरसाते हो।
एक-एक को जगा-जगाकर, सबको सजग बनाते हो।।2।।
'राम-रूप' में आकर तुमने, जग को 'मानस' ज्ञान दिया।
'कृष्ण-रूप' में आकर तुमने, 'गीता' का मधुगान किया।।3।।
'बुद्ध-रूप' में आकर तुमने, जग को दिया 'दया' का दान।
'ईसा' के रूप में तुमने, जग को दिया 'क्षमा' का ज्ञान।।4।।
'नवी' में आकर तुमने, जग को 'समता' सिखलाई।

'मीरा' के स्वरूप में तुमने, 'भगवत्-भक्ति' दिखलाई।।5।।
अशरण-शरण शरण होकर तुम, ऋषिवर! शरणानन्द कहाये।
जग कैसे आनन्दित होवे, ऐसा सत्-पथ दरसाये।।6।।
उथल-पुथल संसार सरोवर, जहाँ शान्ति का नाम नहीं।
सभी जगह है अहं गरजता, रंच कहीं आराम नहीं।।7।।
अधिकारों की छीन-झपट का, सभी जगह बाजार गरम।
नहिं परवाह किसी को कुछ भी, क्या वस्तु है धरम करम।।8।।
ऐसे जग को जीवन देने, लेने उसका समुचित भार।
आये ऋषिवर इस धरती पर, तुम हो करुणा के अवतार।।9।।
अपने जाने असत् त्याग को, मानो सब साधन का मूल।
सभी सिद्धियाँ इसमें रहतीं, तनिक न होती इसमें भूल।।10।।

कितना सरल सुगम है दर्शन, दिव्य मार्ग दरसाये तुम।
जीवन को सुन्दर करने की, सुन्दर राह दिखाये तुम।।11।।

अक्षर-अक्षर बोलते, हैं जिसका है गुणगान।
ऐसे सद् 'युग-पुरुष' को बारम्बार प्रणाम्।।

साधन-सोपान

'आत्म-निरीक्षण' करके अपना, अपने दोषों को पहचानो।
अपने-जाने 'असत्' त्याग को, मानव का पुरुषारथ मानो।।1।।
'सेवा', 'त्याग', 'प्रेम', अपनाओ, 'मानवता', जग जायेगी।
जीवन को सुन्दर करने का, सुन्दर पाठ पढ़ायेगी।।2।।

'राग-द्वेष' की सूक्ष्म जड़ों को, गहराई से खोद निकालो।
मूल भूल है यही हमारी, पहचानो इसको मत टालो।।3।।
ज्यों-ज्यों दोष मिटेगा अपना, त्यों-त्यों दृढ़ता आयेगी।
कभी न हिम्मत हारो 'साधक', सभी भूल मिट जायेगी।।4।।
करना तुमको शेष नहीं कुछ, केवल 'सत्संग' करना है।
अपना लो इस महामन्त्र को, नहीं किसी से डरना है।।5।।
होकर 'शान्त' 'मूक' हो जाओ, सभी शक्ति खुल जायेगी।
परमपिता परमेश्वर की तब, राह तुम्हें मिल जायेगी।।6।।

* प्रार्थना *

जोड़ के हाथ झुका के मस्तक, माँगें यह वरदान प्रभु।
द्वेष मिटाएँ, प्रेम बढ़ाएँ, नेक बनें इन्सान प्रभु।।
भेदभाव सब मिटे हमारा, सबको दिल से प्यार करें।।
जाए नजर जिस ओर हमारी, तेरा ही दीदार करें।।
पल-पल छिन-छिन करें हमेशा, तेरे ही गुणगान प्रभु।।
जोड़ के.....

दुःख में कभी दुःखी न होवें, सुख में सुख की चाह न हो।
जीवन के इस कठिन सफर में, काँटों की परवाह न हो।।

रोक सकें न पाँव हमारे, विघ्नों के तूफान प्रभु।।

जोड़ के.....

दीन-दुःखी और रोगी सबके, दुखड़े निशिदिन दूर करें।
पोंछ के आँसू रोते नैना, हँसने पर मजबूर करें।।
तेरे चरण की सेवा करते, निकलें तन से प्राण प्रभु।।

जोड़ के.....

तेरे ज्ञान से इस दुनियाँ का, दूर अँधेरा कर दें हम।
सत्य प्रेम के मीठे रस से, सबका जीवन भर दें हम।।
'वीर' धीर बन जीना सीखे, यह तेरी सन्तान प्रभु।।

जोड़ के.....

* महामंत्रम् *

हरि शरणम्, हरि शरणम्। हरि शरणम्, हरि शरणम्।
महामानव ने कृपा कर, दिया हमको महामंत्रम्।
न भूलें हम, न भूलें हम।। हरि शरणम् हरि शरणम्।
चाहे सुख की छटा छाये, चाहे दुःख की घटा आये।
खुशी हो या हजारों गम।। हरि शरणम्, हरि शरणम्।
नहीं दुनियाँ में कुछ अपना, यह सब एक रात का सपना।
सत्य है वह अमर प्रीतम।। हरि शरणम्, हरि शरणम्।
प्रीत की जोत जग जाये, विरह की आग लग जाये।
फिर बरसे प्रेम की रिमझिम।। हरि शरणम्, हरिं शरणम्।
यही है जुस्तजू अपनी, यही है आरजू अपनी।
हरि का होके निकले दम।। हरि शरणम्, हरि शरणम्।

* झण्डा अभिवादन *

सेवा, त्याग, प्रेम का झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
ऊँचा सदा रहेगा झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।
सेवा, त्याग, प्रेम का झण्डा, ऊँचा सदा रहेगा।।

सेवा-त्याग.....

राग-द्वेष को दूर भगाकर, त्याग-प्रेम को गले लगाकर,
जन-जन में, 'मानवता' लाकर सबका भला मनायेगा।।

सेवा-त्याग.....

हृदय-हृदय में आशा भरकर, साधक-जन को सजग बनाकर,
जग का प्रेमी सेवक बनकर, सबको मार्ग बतायेगा।।

सेवा-त्याग.....

विश्व-बन्धुता जग में लाकर, पावन प्रेम सभी का पाकर,
प्रभु का सच्चा भक्त बनाकर, सबको प्रेम लुटायेगा।।
सेवा-त्याग.....

आओ भाई आगे आओ, इस झण्डे को शीश नवाओ,
सभी लोग इक स्वर में गाओ, विश्व शान्ति यह लायेगा।।
सेवा-त्याग.....

'मानव सेवा संघ' सुदर्शन, सबका हित कर पायेगा।
सारा जग आनन्दित होकर, झण्डे का गुण गायेगा।।
सेवा-त्याग.....

* प्रार्थना *

मेरे नाथ!

आप अपनी सुधामयी, सर्व-समर्थ, पतितपावनी अहैतुकी कृपा से मानव-मात्र को विवेक का आदर तथा बल का सदुपयोग करने की सामर्थ्य प्रदान करें, एवं हे करुणासागर! अपनी अपार करुणा से, शीघ्र ही राग-द्वेष का नाश करें, सभी का जीवन सेवा, त्याग, प्रेम से परिपूर्ण हो जाय।

ओ३म् आनन्द! ओ३म् आनन्द!! ओ३म् आनन्द!!!

* सर्वहितकारी पुकार *

सबका भला करो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।
सब पर दया करो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।
सब पर कृपा करो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।
सबके हृदय बसो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।
सबको सन्मति दो भगवान।
सबका सब विधि हो कल्याण।।

* सन्त-संदेश *

प्राणप्यारे के प्रिय साधको!

सभी साधक साध्य के होकर रहें, उन्हीं की महिमा को अपनाकर सभी के लिये उपयोगी हो जाएँ, यह माँग जीवन की माँग है। अनुपयोगी वही रहता है जिसे अपने लिए किसी से कुछ चाहिए। अपना करके सृष्टि में कुछ नहीं है। 'अपने' अपने में अवश्य है। 'अपने' में अपनी प्रियता स्वतः होती है, की नहीं जाती। केवल प्रेमास्पद के अस्तित्व और महत्त्व को अपनाना है।

सर्व-समर्थ प्रभु अपनी अहैतुकी कृपा से तुम्हें अपनाकर उपयोगी बनाएँ-इसी सद्भावना के साथ!

अकिंचन :
शरणानन्द

मानव सेवा संघ के उपलब्ध प्रकाशन (22-8-08)

1. सन्त समागम भाग–1
2. सन्त समागम भाग–2
3. सन्त समागम भाग–3
4. सन्त वाणी भाग–1
   (सफलता की कुंजी)
5. सन्त वाणी भाग–2
6. सन्त वाणी भाग–3
7. सन्त वाणी भाग–4
8. सन्त वाणी भाग–5 (क)
9. सन्त वाणी भाग–5 (ख)
10. सन्त वाणी भाग–6
11. सन्त वाणी भाग–7
12. प्रश्नोत्तरी (सन्त वाणी)
13. सन्त सौरभ (सन्त वाणी)
14. सन्त उद्‌बोधन
15. प्रेरणा पथ
16. सन्त पत्रावली भाग–1
17. सन्त पत्रावली भाग–2
18. सन्त पत्रावली भाग–3
19. जीवन दर्शन भाग–1
20. जीवन दर्शन भाग–2
21. चित्त शुद्धि भाग–1
22. चित्त शुद्धि भाग–2
23. जीवन पथ
24. मानव की माँग
25. मानव दर्शन
26. मूक सत्संग और नित्य योग
27. मानवता के मूल सिद्धान्त

28. सत्संग और साधन
29. साधन तत्त्व
30. साधन त्रिवेणी
31. दर्शन और नीति
32. दुःख का प्रभाव
33. मंगलमय विधान
34. जीवन विवेचन भाग–1 (क)
35. जीवन विवेचन भाग–1 (ख)
36. जीवन विवेचन भाग–2
37. जीवन विवेचन भाग–3
38. जीवन विवेचन भाग–4
39. जीवन विवेचन भाग–5
40. A Saint's call to Mankind
41. Sadhna Spot light by a Saint
42. संत जीवन दर्पण
43. मानव सेवा संघ का परिचय
44. साधन निधि
45. पाथेय भाग–1
46. पाथेय भाग–2
47. पथ प्रदीप
48. प्रार्थना तथा पद
49. मैं की खोज
50. जीवन विवेचन भाग–6 (क)
51. जीवन विवेचन भाग–6 (ख)
52. जीवन विवेचन भाग–7 (क)
53. जीवन विवेचन भाग–7 (ख)
54. संत वाणी भाग–8

संत वाणी/जीवन विवेचन कैसेट्स एवं संत वाणी CD/DVD/MP-3
तथा जीवन दर्शन मासिक पत्रिका भी उपलब्ध है।

मानवता में ही पूर्णता निहित है
त्याग
प्रेम
सेवा
मानव सेवा संघ
मानव सेवा संघ, वृन्दावन
वृन्दावन, जि. मथुरा (उ.प्र.) 281121 फोन: (0565) 2443181
सहयोग राशि
रू. 5/